धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जनवरी - 2011

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का
160 वाँ शुभ जन्म महोत्सव

पृष्ट 20 का बाकी
मांगी।

श्रीमान सुन्दर लाल जी :- गुरू महाराज के दर से मिलने वाली बरकतों का कोई शुमार नहीं हो सकता। घर में हम चार सेवक हैं। बहुत बरकतें मिली हैं। मैं सेवक बनने से रुक रहा था और इस दर का पूरा पता न था। बड़े भाई साहब का ऐसा दिल है कि वो बहुत सब पर उपकार करते हैं। मैं किसी सभा से बीच में नहीं उठता। और विघ्न नहीं डालता। सुबह पानी पीने से बहुत फायदा हुआ है। मेरी भाभी जी ने सभाओं से बहुत फायदा उठाया है। वह बेबस कहने लगी हैं। जो इस गुरू से जुड़ेगा उसका बहुत फायदा होगा। धीरे धीरे सारे परिवार का ही भला होगा।

मधु सूदन जी :-बहुत भाव विभोर होकर कहा "अहो भाग्य सत्गुरू तुम्हें मैंने पाया तुम्हारे फैजों का गीत जाए न गाया।" श्रीमति माता विद्यावती जी ने इस दर से जोड़ा है। मुझे उनका उपकार बार बार याद आता है ये सबसे बड़ा उपकार है। अपने बेटे से बढ़कर वे मुझे थपकियाँ देती रहती थीं। उनकी याद बार बार आ रही है। अब वो नहीं रहीं। बार बार उनका धन्यवाद करने को जी करता है। सारी सभाओं में अपनी तरफ काफी ध्यान जाता रहा। "सुरक्षित हूं हे भगवान तुम्हारे हाथ में आकर" इस भजन से मेरा दिल बहुत हिल गया और मैं बहुत रोता रहा। काश मैं इस दर से सदा जुड़ा रह सकूँ। इस बार महोत्सव पर सेवा में दो दिन लगाए हैं। आगे से ज्यादा से ज्यादा लगाने की कोशिश करूंगा।

गोपाल कृष्ण जी गंगानगर :- मेरे जैसे नीच कीड़े बजूदों को इस निराले दर पर आने का सौभाग्य मिल हि गया है, पिता श्री से संबन्ध बहुत सुंदर हो गया है। उनकी ईमानदारी, हमदर्दी नेकी दिल पर बहुत प्रभाव ड़ालती है। मेरी धर्म पत्नी जी सेवका बनी हैं। इस बात की बहुत खुशी हुई है। बुरी संगत अच्छी लगती थी। ईर्ष्या आती थी। गुस्सा आता है। इसका दुख होता रहा है। नीच संगत से बचने का संग्राम करूंगा और ज्यादा से ज्यादा इस दर से जुड़ने की कोशिश करूंगा।

मक्खन सिंह जी :- मैं चार माह के लिए शराब और सिगरेट छोड़ता हूं। सौ रूपय दान में देता हूं।

रामचद्रं जी :- मैं भी शराब छोड़ता हूं और सौ रूपया दान में देता हूं।

ये प्रभावशाली-सभा काफी लंबी हो गई। सभापति जी ने सब हाजरीन का, धर्मशाला प्रबंध का, किताबों की सेवा करने वालों का, सभाएं कराने वालों का, पण्ड़ाल सजाने वालों का, भजनों का गान करने वालों का, पानी आदि गर्म करने वालों का, महोत्सव में सेवाओं में भाग लेने वालों का बार बार धन्यवाद किया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा और अन्य सहकारी शक्तियों की अपार कृपा का हृदय की गहराई से कोटि कोटि धन्यवाद अदा किया, जिनकी कृपा से परम पूजनीय भगवान देवात्मा का यह 160 वां शुभ महोत्सव हमारी योग्यताओं से कहीं ज़्यादा शानदार कामयाबी के साथ संपन्न हुआ है। दो ढ़ाई सौ के करीब यात्री गण सब स्थानों से आकर पधारे। प्राय: ढ़ाई सौ के करीब खेड़ा इंस्टीटयूब का स्टाफ और बच्चे विशेष दिन की दोपहर से शाम तक सब सभाओं में लाभ उठाते रहे। बहुत सुंदर चहल-पहल और रौनक बनी रही। किसी न किसी अंश में देव प्रभाओं का वितरण हुआ। आत्माओं को कुछ सरस होने और लाभ उठाने का शुभ अवसर मिला। इस सब के लिए जिस कदर भी परम पूजनीय भगवान को धन्यवाद किया जाए उतना ही कम है। उसके पश्चात सब ने खड़े होकर देव आरती का गान बड़े उत्साह और श्रद्धा और जोश से किया और चार बार जय ध्वनि की गरजना के साथ ये अति हितकर पर्व संपन्न हुआ (हाज़रीन में से एक)

धर्म जीवन

खण्ड 24 अंक 1

जनवरी - 2011

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 160 वाँ शुभ जन्म महोत्सव

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 160 वाँ शुभ जन्म महोत्सव 20 दिसम्बर से 23 दिसम्बर तक शुभवती धर्मशाला, सैक्टर 18-डी चण्डीगढ़ में पिछले कई वर्षो की तरह बहुत चाव भाव से मनाया गया। इस शुभ अवसर की सफलता के लिए विशेष तैयारियाँ की गई।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सब स्थानों का अपने साथियों सहित दौरा किया। सेवकों और श्रद्धावानों को इस शुभ अवसर पर पहुँचने की प्रेरणा दी। इस प्रयोजन के लिये बहुत से पत्र लिखे गए, फोन भी किये गये। हित स्रोत और धर्म जीवन के विशेष अंक निकाले गये। उनके द्वारा भी यह शुभ संवाद पहुँचाया गया। सैंकड़ों सुन्दर निमंत्रण पत्र छपवा कर अधिकारी जनों को डाक द्वारा प्रेषित किये गये।

महोत्सव की सभाओं के लिये हर वर्ष की भांति पंडाल तैयार किया गया। पंडाल को अंदर से बर्फ सी सफेद चादरों से खूब सजाया गया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा का भव्य फोटो लगाया गया। भगवान देवात्मा का मूल वाक्य तथा अन्य प्रेरक देव वाणियाँ बहुत सुंदर ढंग से लगाये गये। महान कर्मचारियों तथा उच्च आत्माओं के फोटो स्टेज के दोनों ओर सजाए गए। दिव्य शिक्षा गुरूकुल महाविद्यालय (college) की छात्राओं ने श्रीमान जगदीश जी के नेतृत्व में सजावट का कार्य किया। बहुत सारे झण्डे लगाए गए। कुछ धर्म सम्बन्धी पहले आ गये थे, वह भी जगदीश जी के साथ सहायक हुए। धर्मशाला ने भी कमरों की सफेदी आदि करवा कर उन्हें स्वच्छ करवाया। बैंड बाजे का प्रबन्ध किया गया। गर्म पानी आदि का भरपूर प्रबन्ध किया गया जिसे श्रीमान सीताराम जी तथा श्रीमान बूटा सिंह जी ने बखूबी निभाया। घण्टा बजाने का काम श्रीमान सुखदेव सिंह जी गुनियाना करते रहे। किताबों को बेचने का काम श्री ओम प्रकाश वर्मा जी ने खुशी खुशी संभाला। दफ्तर का काम जगदीश जी तथा उनके सुपुत्र ने संभाला। भजनों का गान जगदीश जी और श्रीमान दत्ता जी ने पेश किया।

चण्डीगढ़ कोचिंग सैंटर के छात्र-छात्राओं ने भी सुंदर भजनों द्वारा बहुत उत्साह के साथ भाग लिया। श्रीमान गुरूदेव राज जी और साथियों ने प्रात: 22 दिसम्बर विशेष दिन पर पूर्ण उत्साह के साथ भजनों का गान किया। बैंड बाजे की उत्साहित करने वाली

धुनों की तर्ज़ पर बहुत से उपस्थित जनों और बच्चों ने काफी समय तक भावविभोर होकर नृत्य द्वारा अपनी खुशी का प्रकाश किया।

खाने का प्रबन्ध बहुत अच्छे तरीके से किया गया। सभाएं और लैक्चर अच्छे प्रभावदायक रहे। मौसम ने भी पूरा साथ दिया। अधिक ठण्ड न होने के कारण पूरा कार्यक्रम निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

निम्नलिखित स्थानों से यात्री आये:-

दिल्ली, मेरठ (मन्डवानी), खतौली, देहरादून, मोदीपुरम, गंगानगर, पदमपुर, गजसिंह पुरा, गोनियाना मंडी, थराजवाला, महिमा सवाई, भठिंडा, मल्लेका, केसूपुर, संगरूर, कल्याण, यमुनानगर, सहारनपुर, कुआँ खेड़ा, लुधियाना, बंगा, गुजरात, मोगा, रनियाँ, अम्बाला, करनाल, डेरा बस्सी, बुंगी (फाज़िल्का), बनी, बनी के निकटवर्ती गाँवों से, मानसा, समराला, छतबीड़, पंचकूला, ज़िरकपुर मोहाली और चण्डीगढ़ आदि।

20 दिसम्बर 2010 प्रवेश सभा 4.30 बजे सायं :

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :-

श्रद्धापूर्ण भजन "हमारे पूजनीय सतगुरूजी तुम हो धन्य, तुम हो धन्य" के साथ श्रीमान जगदीश जी ने सभा का शुभारम्भ किया तथा उपस्थित सभी जनों ने उनका साथ दिया। तदुपरांत परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सुंदर फोटो द्वारा अर्चन किया गया। फिर देव स्तोत्र का समूह गान सबने खड़े होकर किया। सभापति जी ने गहरे भावों के साथ देव स्तोत्र की सुंदर व्याख्या तथा प्रार्थना की। उसके बाद "बड़े सौभाग्य उनके हैं जो गुरू चरणों में आते हैं" नामक भजन का गान किया गया।

फिर सभापति जी ने बताया कि जिस अद्वितीय हस्ती का शुभ जन्मदिन मनाने के लिए हम इकट्ठे हुए हैं, वह हमेशा देते ही देते हैं, हम उनको कुछ नहीं देते।

हमने अमरीका से परमाणु सन्धि की है कि हमें पॉवर मिले, हमारे कारखाने मिलें चलें और उपज में वृद्धि हो। हम भारतीय केवल धर्म को export करते हैं। जो धर्मवान बाहर जाते हैं, अक्सर उनकी करतूतों से हमारे सिर शर्म से झुक जाते हैं। जो हम बोते हैं, वही काटते हैं।

न धन से, न विद्या से, न पद से, हमारा सच्चा हित हो सकता है, क्यों हम इन वस्तुओं के लिए भागे जाते हैं। अखबारों में महा-घृणित पापाचार की, और बलात्कार की घटनाएं छपती हैं। कल के अखबार में मध्य प्रदेश की खबर है कि 45 वर्ष के एक आदमी ने 107 वर्ष की महिला के साथ बलात्कार करके उसकी मृत्यु कर दी। हमारे जागरण, कीर्तन, तीर्थ, स्थान और पूजा पाठ आदि सब किसी काम नहीं आते। हर रोज़ हमारे नेता scam (घोटाला) के शिकार होते हैं। ढींगे मारने से सचाई नहीं आती। जो दान इस दर पर मिलता है, इसके बिना हमें कहीं ठिकाना नहीं है। सच्चे धर्म के बिना चरित्र (character) नहीं बनता और character के बिना भला नहीं होता। हमें कोठियाँ, धन, कारें, पद आदि कीमती लगते हैं।

परम पूजनीय देवात्मा ऐसे सत्गुरू हैं कि उनकी ज्योति के बिना इंसान अंधा रहता है और बुरी तरह गिरता है, नाना (विभिन्न) संबंधों में पिशाच क्रियाऐं करता है। एक computer engineer ने अपनी पत्नि को कत्ल करके उसके 70 टुकड़े कर दिये और उन्हें Freezer में डाल दिया। हमारी विद्या, हमारा शुभ नहीं करती यदि उच्च भाव

न हों। हम डॉक्टर होकर भी उच्च भावों के बिना कसाई बन जाते हैं, Teacher होकर पिशाच बनते हैं, काम-वासनाऐं है और भेड़िया-प्रवृति है। बहुत ही ऊँचे सरकारी पद पर होकर 1-1 जन की 86 वर्ष की आयु में 15-16 साल की लड़कियों के साथ अश्लील CD देखी गई। यह सब नीच जीवन की लीला है। A.Faja साहब अपने आप को निर्दोष बतातें है, Kalmadi साहब जैसे भी अब मुँह दिखाने के योग्य नहीं हैं। गुरू के दर से मिलने वाली ज्योति शक्ति के बिना मनुष्य सब बरकतें पाकर भी पिशाच होने के लिये अपने आप को मजबूर पाता है। Ragging करके बच्चे मर जाते हैं। पूजनीय भगवान हमारी पहचान से परे हैं। जिस इंसान को अपनी नीच वासनाओं की कुछ सच्ची समझ आ जाए तभी उसे गुरू महाराज की कुछ समझ आ सकती है। भगवान की रोशनी में अपना आत्मा, अपने भाव, अपनी चिंताऐं, अपनी गतियाँ नज़र आते हैं।

हमारी गरज़ें पूरे करने वाले अच्छे लगते हैं और उनमें रोक डालने वाले बहुत बुरे लगते हैं जैसे बच्चों को टी. वी. पर Cartoon देखने से रोकें तो बच्चे बौखला जाते हैं। जैसे बच्चों के सुख की कोई हद नहीं, उसी प्रकार हमारी काम-वासना और नीचता की कोई हद नहीं। नौजवान नशे पीते और खाते थे, हमारे हाथ बांधते-बांधते भी किसी ने न सुनी और वह भरी जवानी में बीवी बच्चे छोड़ कर चल बसा। जो गलत नियम पूरे करेगा वह नारकीय और दुखी होकर बर्बाद होगा। जब तक अपने भावों का ज्ञान नहीं, अपनी चिंताओं और कर्मो का ज्ञान नहीं, जो भगवान की ज्योति दिखा सकती है, तब तक इंसान सदा खतरे में है।

हम कव्वे हैं, काले हैं, गिद्ध हैं, पिशाच हैं, बदमाश हैं मगर नज़र नहीं आता। डॉ. खेड़ा साहब के पड़नाना जी डॉ. सिटी राम जी के जीवन का परिवर्तन ब्यान किया गया, माता को भी दवाई की जगह पानी देते थे, कोकीन बेचते थे, माता को भेजे रूपयों में से 100 (सौ रूपये) रख लिये, दान देकर भी इंसान का धर्मवान बनना संभव नहीं है। ऐसा ही हमारे संबन्धों का भी हाल है। गुरू को भेंट देते वक्त भी 2 रू की जगह 1 रूपये डालते थे। भगवान के प्रभाव पाकर इंसान अपने अंदर की नीचता व गंदगी को देखने लगता है और बयान करने के लिये व्याकुल हो जाता है। डॉक्टर साहब को अपने अपराध नज़र आये और अपनी पत्नी तथा बहू के पावों में टोपी रख कर माफ़ी मांगी। इस जगह आकर अपनी नीचता, कमी, बुराई, गुनाह नज़र आने लगते हैं। इस तरह उनका भगवान के चरणों में आने का सौभाग्य सुकल हुआ और उनके बेटे उन्हें सरे बाज़ार चरणों में सिर रख कर प्रणाम करने लग गये। हम सब उस देश के वासी बन जाऐं जहाँ देव प्रभावों की गंगा बहती है। इस गंगा में नहा कर होश आती है, माता-पिता का रूप नज़र आने लगता है, उनकी कुर्बानी व उपकार नज़र आने लगते हैं।

देवात्मा केवल और केवल शुभ-अनुरागी तथा सत्य-अनुरागी हैं। वह माता के रूप को देख कर उनके चरणों में धूल-मिट्टी में अपने आपको पसार देते हैं। शुभ व्यवहार शुभ अनुरागों से हो सकते हैं। आप लोग ऐसे आविर्भाव का शुभ जन्म दिन मनाने के लिये आये हैं। हमारा परम सौभाग्य है कि हम ऐसे द्वार पर आ गये जहाँ हमारी झोलियाँ भर रही हैं।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी कौए के अंडों को गधों के माथे पर फोड़ते थे, महा-अबोधी थे। गुरू महाराज के प्रभावों से क्या-से-क्या बन गये। उन्होंने फरमाया था कि सुबह 4 बजे से लेकर रात

के 10 बजे तक अपने और औरों के हित के लिये मगन रहते थे। उन्होंने पाप के किले फतह किये देवात्मा के प्रभावों को पहुँचा-पहुँचा कर। अपनी बच्चियाँ मारने वालों को बदला, उनसे लड़कियों के स्कूल खुलवाये, उनकी शराब की भट्टियाँ जहाँ बहुत किस्म की शराब बनती थी, राजे-महाराजों को पेश करते थे, वह भट्टियाँ खत्म करके वहाँ साधन-मंदिर बनवा दिये। और ऐसे शराबी ने हैज़ा के शिकार होकर, मौत की परवाह न करके, बहुत ज़ोर देने पर भी शराब नहीं पी।

उनके साहबजादे श्रद्धेय श्रीमान ईशवर सिंह जी की श्रद्धा पवित्रता, कृतज्ञता का कोई सच्चा अनुमान नहीं लगा सकते। श्रीमान जी की पवित्रता को एक एक कामी-पुरूष ने बेवस होकर बयान किया है।

श्रीमान नौध सिंह जी का जीवन बयान किया गया। "अहम् ब्रह्मऽस्मि" की रट लगाने वाले ब्रह्म जी शराब, काम-वासना और लोभ-लालच ने खा लिये थे। उन खुदाजी को भगवान के प्रभाव मिलते हैं जिनसे वह ऋषि बन गये, जिनकी सगी बहन अपनी बेटी को उनके साथ किसी निकट के मुकाम के लिये भी पहले नहीं भेज सकती थीं, वह कर्मचारी लड़कियों की रक्षा के लिये उनके साथ प्रचार के लिये जाने के लायक बन गये। देव-प्रभावों का कोई बदल नहीं है, वह देव-रूप की देन हैं, इनके बिना मनुष्य अंधा और पागल ही रह जाता है।

श्रीमान धर्मबल जी जैसे योग्य आत्मा प्रचार करते-करते व्यापार करने लगे। हमें तो कर्मचारियों की महानता की समझ नहीं आ सकती, फिर देवात्मा को कैसे समझ सकते हैं? श्रीमान धर्मबल जी ने रिश्वत लेनी बंद कर दी। पिता उन्हें अंदर बंद कर देते हैं, पिटाई होती है, फिर भी उन्होंने कहा कि क्या कोई भूखा, गरीब अपनी बेटी को अपने सुख के लिये बाज़ार में बिठा सकता है?

सभापति जी ने खड़े होकर सबका इस शुभ अवसर पर आने के लिये सन्मान किया, welcome किया, जी आयां कहा, और धन्यवाद दिया और कहा कि इस दर से जुड़े रहकर हम अपनी योग्यता अनुसार सुरक्षित रह सकते हैं।

हम सूअर हैं, हमें गंदगी अच्छी लगती है, भाई का दुख दूर करना है, उससे ईर्ष्या नहीं करनी। खुद देवात्मा से जुड़ना होगा और भाईयों को भी यहाँ लाना होगा। यह ऐसा द्वारा है जो अंदर की मैल को धो देता है, नीच गतियाँ बंद कर देता है।

श्रीमान गुरूदेव राज जी के बारे में माता-पिता के रूप देखने और उनके भक्त पुत्र बनने की बात सुनाई।

शराब पीकर मौत के सिवा और कुछ नहीं मिलेगा।

यदि देवात्मा के प्रभाव मिल जायें तो और कोई नुकसान नुकसान नहीं रहता। देवात्मा जैसे पतित पावन के साथ जुड़ जायें इसी में हमारी खैर है।

सभाओं से लाभ उठाने के नियम बताये गये: सही वक्त पर आयें, सब सभाओं में शामिल हो, कोई सभा न छोड़ें, प्रार्थी होकर आयें, अवगुण चिंतन न करें, सदगुण चिंतन करें, शुभ कामना करें, प्रभावों के लिये प्रार्थना करें।

इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी मंत्री देव-धर्म ने बहुत उच्छवास और उल्लास के भावों से भर कर सब यात्रियों का उनके स्थानों का नाम ले लेकर भरे दिल से स्वागत किया। बहुत सी सूचनायें और Duties बताई गई। सबको ऐकाकारी

पहन कर सभाओं में आने की प्रार्थना की गई। अगले दिन का सभाओं का प्रोग्राम बताया गया और सबका धन्यवाद करके, 4 बार जय-ध्वनि के साथ महोत्सव की यह प्रवेश सभा समाप्त हुई जिसमें 250-300 के करीब स्त्री-पुरूषों ने शामिल होकर लाभ उठाया। सभा बेहद प्रभाव-शाली थी जिससे यात्रीगण धन्य-धन्य होते रहे और स्वंय श्री मंत्री जी ने बहुत भरे दिल के साथ सभापति जी को दिल झुका कर धन्यवाद दिया।

21 दिसम्बर 2010, पहली सभा प्रातः 8.30 बजेः-

सभापतिः- श्रीमान बल बहादुर सिंह जी

विष्यः- परम पूजनीय भगवान देवात्मा का मनुष्यात्माओं के लिये परम आवश्यक और जीवन दायक संबन्ध।

सबसे पहले श्रीमान सुनील दत्त जी ने "सुरक्षित हूँ मैं हे भगवान" वाला गीत मधुर स्वर में गाया। बहुत ही सुंदर वातावरण पैदा हुआ। कुछ जन पाक आँसु बहाते नज़र आये। फिर सबने खड़े होकर भगवान की छवि का फूलमालाओं से अर्चन, देव स्तोत्र का गान और व्याख्या का साथ दिया।

सभापति जी ने सभाओं और महोत्सव की सफलता के लिये हृदय के गहरे भावों से और पाक आँसू बहाते हुए शुभकामना की। श्रीमान जगदीश जी ने, "परम आवश्यक जीवन दायक" वाला अति सुन्दर भजन जोश और उत्साह से भर कर गाया। उनका हृदय भर भर आ रहा था और अन्य जन भी बहुत प्रभावित हो रहे थे। सभापति जी ने सभा का विषय बताते हुए फरमाया कि बहुत सारे धर्मो का लक्ष्य है ईश्वर को प्राप्त करना मगर सत्य यह है कि ईश्वर तो है ही नहीं, तो उस की प्राप्ति या उसके साथ संबन्ध सब निरर्थक हो जाता है।

हमारा जीवन संबन्धियों से जुड़ा हुआ है, उन पर निर्भर करता है। हमारे 4 प्रकार के संबन्धी है- भौतिक अस्तित्व, वनस्पति, पशु और मनुष्य जगत। इनसे हम जुड़े हुए हैं, इनका संबन्ध आवश्यक भी है और जीवनदायक भी।

हवा परम आवश्यक है, जीवन दायक है, खासकर ऑक्सीजन। इससे मरते मरते बीमार बचाये जाते हैं इसके बिना झट जान निकलने को आती है। पानी और सूर्य भी परमावश्यक है। खुराक भी परमावश्यक है। ये सब जीवन दायक संबन्धी हैं। खुराक की आगे बारीकियां हैं। वनस्पति जगत पर हमारी बहुत सी खुराक निर्भर है। पशु जगत भी और मनुष्य जगत भी इसी प्रकार हमारे परमावश्यक और जीवन जीवन दायक संबन्धी है। मनुष्य समाज के बिना सामाजिक, मानसिक ज्ञान नदीं मिल सकता। धार्मिक ज्ञान, भले-बुरे की तमीज, पुस्तकें, सब मनुष्य जगत की देन हैं। Police चाहे कैसी भी है, वह कुछ समय के लिये नाकारा हो गई थी। उन दिनों में जितने बलात्कार, कत्ल, चोरियाँ, डाके और दंगे हुए, उतने पुलिस के होते हुए कभी नहीं हुए। ये पुलिस और सरकार भी आवश्यक संबंधी हैं।

अकबर बादशाह ने 1 नवजात शिशु को तहखाने में रखा और गूँगी नर्सो द्वारा उसका पालन करवाया। फिर उसकी भाषा देखनी चाही तो वह बच्चा गधे हाँकने वालों की ही आवाज़ निकालने लगा क्योंकि वह आवाज़ रोशनदानों में से उसके कानों तक जाती रही थी। हमें माता-पिता ने बोलना, चलना और अन्य बातें सिखाई। जितनी भी संस्थाऐं हैं, वह सब मनुष्य के भले और विकास के लिये हैं। मनुष्य जगत भी हमारा आवश्यक

संबन्धी है।

परम पूजनीय भगवान हमें कौन सा जीवनदान देते है? जीवन का कोई अर्थ न हो यदि उच्च कीमतें न हों। वह जो इस दर से जुड़ता है, वह आँख कान दिमाग और दिल खोलकर जीता है। हमारे संबंध नीच भावों को लेकर हैं - इससे आत्मा का नाश होता है।

"अहं अनुराग स्वार्थ का उत्पादक, स्वार्थ - भाव जीवन का नाशक" हम देवात्मा पर निर्भर करते हैं - आत्मा को जानने के लिये, आत्मा के रोगों को देखने के लिये, आत्मा के रोगों से बचने के लिये और उच्च जीवन प्राप्त करने के लिये। इसलिये देवात्मा का संबन्ध हमारे लिये परम आवश्यक और जीवन दायक है।

सभापति जी ने एक सेवक प्रेम कुमार बनी को खड़ा किया और बताया - भगवान देवात्मा बताते हैं कि नीच घृणा अग्नि है, वह आत्मा और उच्च भावों को दग्ध कर देती है। देव ज्योति हमें हमारे व्यवहारों का प्रकृत (वास्तविक) रूप दिखाती है। यह प्रेम जी अपने माता - पिता से फटे हुए थे। घर छोड़ कर पत्नी समेत निकल गये थे। मामा से लड़ते थे, चाचा को दुश्मन समझते थे। उन्हें सत्संग से देव ज्योति का दान मिला - वह माता - पिता के चरणों में झुकने के लिये विवश हो गये। मामा के चरणों में सिर रख कर रो - रो कर माफी मांगी। मामा ने उसी समय सभापति के चरणों में सिर रख कर रोते हुए धन्यवाद दिया। चाचा को उसके दबाये हुए 22,000 रूपये, माफी मांग कर वापस किये, जिनको कतल करना चाहते थे, उनको उपकारी के रूप में देखा। उन्हें बहुत कुछ नया रूप मिला। ऐसा जीवन लाभ करने के लिये हम सब मनुष्यात्मा परम पूजरीय देवात्मा के मोहताज है।

श्रीमान लाला जुल्लीराय जी कानूनगो साहब जी की घटना सुनाई - किस तरह व्याकुल होकर भगवान के यह कहने पर कि "क्या तुम खून पीते हो? क्या तुम ये खून पीना छोड़ नहीं सकते" जुल्लीराम जी हिल गये - सदा के लिये रिश्वत लेना छोड़ दिया पक्के ईमानदार बन गये, उन्हें भी नया जीवन मिल गया। इस तरह नया जीवन लाभ करने के लिये देवात्मा का संबन्ध परमावश्यक है।

सरदार अनोख सिंह जी का परिवर्तन सुनाया, जिन्हें भगवान के देवतेज का ऐसा तीर लगा कि 40 वर्ष की आयु में अफीम से मरते - मरते को नई जान का इंजेक्शन लग गया और वह 84 वर्ष तक जीये और बच्चियों का स्कूल चलाने का परोपकार करते करते मरे।

श्रीमान स्वामी गोविंद राम जी की कथा सुनाई - वह क्या से क्या बना दिये। उन्होंने अम्बाला जिला में भगवान के कार्य के कितने क्षेत्र खोल लिये।

श्रीमान हरिन्दर सिंह जी महिमा - सवाई का परिवर्तन सुनाया, जिन्हें नया विवेक मिल गया, नई आँखे मिल गई।

हमारे बच्चे हमारी कोई कीमत नहीं आँकते - उन्हें माता - पिता का कोई उपकार, कोई त्याग, कोई संग्राम नज़र नहीं आता। श्रीमान सुंदरलाल जी ने कहा कि मेरे बेटे की (जो पहले नीच संगत से बहुत नीचे चला गया था।) श्रवण कुमार बना दिया है।

श्रीमान हरदेव सिंह जी का परिवर्तन सुनाया कि भगवान ने उनमें कैसे कैसे सुधार पैदा किया।

देवात्मा फरमाते हैं कि तुम्हारा आत्मा मुख्य है - आत्मा नहीं तो तुम नहीं, हाँ आत्मा के बिना कुछ भी नहीं। उसके देखने, उसके रोगों का

भयानक रूप देखने और उन रोगों से बचने और आत्मा में उच्च भाव और नया जीवन संचार करने के लिये सारा मनुष्य मात्र देवात्मा का मोहताज है, उन पर पूर्ण निर्भर करता है। इसलिये देवात्मा का संबन्ध सब मनुष्य आत्माओं के लिये परमावश्यक और जीवन दायक है।

सभापति जी के बहुत प्रभावशाली और हृदय स्पर्शीय बयान से सारा माहोल उच्च प्रभावों से भर रहा था अधिकारी आत्माऐं धन्य-धन्य हो रही थीं, अपने सौभाग्य को अनुभव कर कर के परम पूजनीय भगवान के प्रति हृदय से झुकने का सौभाग्य पा रही थीं।

इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने परम पूजनीय भगवान देवात्मा जो अद्वितीय देव ज्योति और देव तेज के दाता है, के संबन्ध को मनुष्यात्माओं के लिये भाव विभोर होकर चंद फिकरों में परम आवश्यक और जीवनदायक बताया। इस सभा के पश्चात् एक सौभाग्यवान जन श्रीमान सुखदेव सिंह जी, के सूपुर, (हरियाणा) ने गहरे भावों से भरकर अपने जीवन में आये अति सुंदर परिवर्तन का खड़े होकर बयान किया और बारम्बार परम पूजनीय भगवान देवात्मा को, धर्म संबन्धियों को, और अपने बड़े भाई को धन्यवाद देते हुए तृप्त नहीं होते थे। उनका बयान बहुत हृदयस्पर्शीय और पूजनीय भगवान के प्रभावों की करामात को दर्शाने वाला था।

इस बयान के बाद श्री मंत्री जी ने दिन के अगले प्रोग्राम की घोषणा की और 4 बार जय ध्वनि के साथ यह अति प्रभावशाली सभा संपन्न हुई।

<u>दूसरी सभा 2.30 बजे दोपहर</u>

सभापति:- श्रीमान बलदेव सिंह जी

वक्ता:- माननीय श्री हरमोहन धवन जी (पूर्व केन्द्रीय उड़डयन मंत्री, भारत सरकार)

पहले एक भजन श्री सुनील जी द्वारा गान किया गया। ठीक ढाई बजे वक्ता महोदय पधारे। बाहर के गेट पर ही श्रीमान बलदेव सिंह जी, मंत्री, जगदीश प्रसाद जी तथा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने अतिथि महोदय का स्वागत किया और सबने सुंदर फूलों के Bouquet उन्हें भेंट किये।

भजन के बाद सभापति जी ने माननीय अतिथि का सुंदर शब्दों में परिचय कराया। उनकी आला योग्यताओं का वर्णन किया और बताया कि वह देव समाज के माननीय सेवक और शायर श्रीमान झंडासिंह जी अलम के दामाद के दामाद हैं। इसके बाद श्री हरमोहन धवन ने अपना बयान शुरू किया जिसमें उन्होंने बताया कि उन्हें 30 वर्ष से मधुमेह (Diabetes) की बीमारी थी, जिसे उन्होंने आहार द्वारा अपने ऊपर प्रयोग करके (विभिन्न आहारों का स्वास्थ्य पर प्रभाव देख देख कर 60 दिन तक अध्ययन करके) सही आहारों का चयन किया तथा उससे सम्पूर्ण स्वास्थय लाभ किया (मधुमेह से मुक्ति प्राप्त करली) उस सफलता के बाद उन्होंने अपने मित्रों तथा संबन्धियों को भी प्रेरणा दी, उन्हें भी 30 से 60 दिन में अपने नियोजित आहार द्वारा विभिन्न रोगों से मुक्त कराया। फिर उन्होंने आम जनता को अपने अनुभवों से लाभ पहुँचाने का सिलसिला चला दिया तथा प्रतिदिन प्रात: 2 घंटे का समय देते हैं जिसमें वह हर आने वाले व्यक्ति को अपने अनुभव का लाभ पहुंचाने का हितकर कार्य कर रहे हैं।

सभा में उपस्थित सभी जनों ने उनके अनुभव से केवल आहार में सुधार करके (बिना दवाई के) सम्पूर्ण स्वास्थय लाभ करने की प्रेरणा प्राप्त की तथा अनुगृहीत हुए।

21.12.10 शाम 4.30 बजे पब्लिक लैक्चर

वक्ता : मिसिज़ सुरजीत बरार

विषय : मनुष्य के दुखों के कारण और उनसे निजात

सभापति : डा० विनोद जी खेड़ा

सर्वप्रथम डा० विनोद खेड़ा ने वक्ता का परिचय करवाया। उनके सौभाग्य का वर्णन किया कि उनके श्रद्धेय पिता जी को गुरू महाराज की शरण पाने का सौभाग्य मिला, उसकी वजह से सुरजीत जी को ऐसी संगत में रहने का सौभाग्य मिला, जिससे उनकी योग्यता को निख़रने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्रीमान बलदेव सिंह जी के साथ विवाह बन्धन से बन्धने से और भी उनका सौभाग्य बढ़ गया। इनहें श्रीमान जी के साथ उनके काम में सहायक होने का जो शुभ अवसर मिला है, उससे इनका और भी भला हो रहा है।

उनके इस ब्यान के बाद उन्होंने वक्ता को अपना ब्यान शुरू करने के लिए निमन्त्रित किया।

वक्ता ने अपना विषय बताने हुए बताया कि सुख दुख मनुष्य जीवन के अटूट अंग हैं। बड़े बड़े विचारशीलों ने भी दुनिया को दुखों का घर बताया है। कुछ प्राकृतिक दुख हैं, जिन पर हमारा ज़ोर नहीं चलता, कुछ उचित दुख हैं, जिनको सहकर हम विकास पाते हैं। जैसे मां दुख उठाकर बच्चे को जन्म देती है, किसान दुख उठाता है, परन्तु फसल के रूप में उसे सुख की प्राप्ति होती है, विद्यार्थी मेहनत करने का दुख उठाता है, परन्तु सफल होने की खुशी प्राप्त होती है। कुछ दुख ऐसे हैं जो हमारे अपने उत्पन्न किए हुए हैं। उनके कारणों का जानना आवश्यक है।

बुद्ध ने कहा कि ख़्वाहिशें दुख का कारण हैं, परन्तु ख़्वाहिशें कहां से आती हैं, यह नहीं बता सके।

ईश्वरवादी कहते हैं कि ईश्वर दुख भेजता है, वही उसे मिटा सकता है। कोई कहता है इस जन्म के कर्मो का फल है, कोई पिछले जन्मों का फल बताते है, कोई दुखों का कारण ग्रहों का चक्कर बताता है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने सत्य अनुरागी होकर विज्ञान को आधार बनाकर दुख के असली कारणों को खोजा है। उन्होंने फरमाया है कि मनुष्य के शरीर में वास करने वाली उसकी जीवनी शक्ति अर्थात आत्मा है। उसकी परिचालक शक्तियां हैं, वह सुख अनुरागों द्वारा परिचालित होती हैं, यह आकर्षण बढ़ते बढ़ते मनुष्य को दुखों से घेर लेते हैं। उन्होंने परिचालक शक्तियों को इस प्रकार परिभाषित किया है।

शारीरिक सुख अनुराग- स्वाद अनुराग, नशा अनुराग, काम अनुराग, आलस्य अनुराग।

अहं सम्बन्धी सुख अनुराग, जैसे घमंड, मान, बड़ाई, पद, प्रभुत्व स्वार्थ- इससे आगे धन वा मोह अनुराग-ईर्षा, द्वेष, नीच घृणा।

इन सब भाव शक्तियों के आकर्षण के बढ़ने से मनुष्य किन किन दुखों को प्राप्त होता है, उसके उदाहरण प्रस्तुत किए।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने केवल यह फिलासफी नहीं दी, बल्कि अपनी ज्योति अधि कारी आत्माओं तक पहुंचाकर उनके अनुचित दुखों को घटाया है, उनके घरों में सुख शान्ति को बहाल किया है, तभी एक एक जन पुकार उठा है कि यदि स्वर्ग देखना है, तो मेरे घर में देखो।

पूजनीय भगवान की ज्योति से कैसे मग़रूर पति अपनी पत्नी से क्षमा मांगने वाले बने, बेटे कैसे पिता के लिए वरदान बन गए, ऐसी कई उदाहरण पेश किए।

उसके बाद विनोद खेड़ा जी ने वक्ता का बहुत सीधे सरल ढंग से पूजनीय भगवान की शिक्षा के बताने पर धन्यवाद किया।

सारा हाल भरा हुआ था पूरा समय बहुत शान्ति से इस भाषण को सुना और कईओं ने बाद में वक्ता को धन्यवाद दिया कि उन्हें कैसे इस भाषण ने प्रभावित किया है।

22 दिसम्बर 2010 (महोत्सव का विशेष दिन भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का खास दिन):-

इस दिन आज से 160 वर्ष पहले परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्म सूर्य उदय होने के समय श्री अकबरपुर, ज़िला कानपुर में पौषवदी प्रतिपदा को हुआ था। इस दिन को विशेष खुशी के साथ प्रति वर्ष मनाया जाता है।

हर साल की तरह सुबह 6.30 बजे धर्मशाला के प्रांगण में नहा धोकर यात्री इकट्ठे हुए और श्रद्धाभाव से भर कर भजनों का गान आरम्भ हुआ। हर भजन के बाद "भगवान देवात्मा की जय" के नारे लगे। यह बहुत सुंदर नज़ारा था। भजन गाते गाते सूर्य की पहली किरण के साथ घण्टा बजा, इसके साथ "भगवान देवात्मा की जय" का नारा बुलन्द हुआ और साथ ही बैण्ड बजने लगा। फिर सबने मिल कर जोश से भरकर "प्रगटे देवगुरू भगवान जीवन ज्योति देने वाले" भजन का गान किया।

उसके बाद श्रीमान बलदव सिंह जी, मंत्री, देवधर्म ने प्रति वर्ष की तरह श्रद्धा भाव से भर कर ऊँचें स्थान पर खड़े होकर इस दिन की सबको बधाईयां दी और सारे मनुष्य जगत के सौभाग्य का वर्णन किया। गुरू महाराज के विशेष ब्राह्मण कुल को, अग्निहोत्री पारिवारिक पूर्वजों को, विशेषकर भगवान के माता-पिता और दादा-दादी जी को आभार प्रकट करते हुए कोटि कोटि धन्यवाद दिया और महाराज के अद्वितीय कार्य (मिशन) के चारों ओर तथा चारों जगतों में फैलने की गहरी शुभकामनाऐं कीं। पूजनीय देवात्मा ने जो महान उपकारों विशेषकर आत्मज्ञान और आत्म कल्याण की गंगा बहाई है, जो मानव के सर्वांगीण विकास का द्वार खोला है, उसको चित्रित किया। यह सारा ब्यान दिलों को हिलाने वाला था और गुरू के चरणों में झुका रहा था।

आखिर में उन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं को प्रेरणा दी कि आज शुभ संकल्प करने, गुरू मिशन में भेंट देने का दिन है। इस सौभाग्य को सफल करना है। चार बार जय ध्वनि कर के यह भावपूर्ण ब्यान समाप्त किया गया।

फिर बैंड बजने लगा और हर वर्ष की तरह डॉ० मुंशा सिंह और कई अन्य साथी और बच्चे उसकी धुन के साथ नाचने लगे और इस प्रकार अपने जोश और खुशी का प्रकाश किया। इसके बाद सभी धर्म संबंधियों और अन्य यात्रियों ने फूलों के हारों द्वारा भगवान देवात्मा का अर्चन किया और आपस में बधाईयाँ दीं।

महासभा :- समय 8.30 बजे प्रातः

सभापति : श्रीमान बलदेव सिंह जी

विषय : परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य और उसकी सिद्धि के लिये उनका घोर तप और उत्पीड़न, धन और जन की अपील।

सबसे पहले श्रीमान जगदीश जी ने भाव विभोर होकर "देवजीवन धारी अद्वितीय धर्मावतार" वाला भजन गाया। सबके खड़े होने पर परम पूजनीय भगवान देवात्मा का उनकी भव्य छवि द्वारा बहुत ही सुंदर फूलों के विशेष हार के द्वारा अर्चन किया गया। फिर देव-स्तोत्र का गान किया गया। सभापति जी ने देवस्तोत्र की श्रद्धाभाव से भरकर व्याख्या की। तत्पश्चात् सबके बैठ जाने पर सभापति जी ने परम पूजनीय भगवान देवात्मा के दरबार में सभा की सफलता के लिये ज़ोरदार प्रार्थना की। भगवान के अद्वितीय देव प्रभावों की भिक्षा माँगी। हम मनुष्यात्माओं की दीन हीन, महामलिन, अंधकारग्रस्त, अति असहाय, अयोग्य दशा को अनुभव करते हुए विनीत भाव से व्याकुलतापूर्ण प्रार्थना की। सहायकारी शक्तियों के समक्ष हृदय से नमन करते हुए सहाय प्रार्थना की। सभापति का हृदय नम्रता और श्रद्धाभाव से प्रेरित था। उनकी आँखे पवित्र आँसुओं से भीग रही थीं और हाज़रीन के हृदय भी अधिकांश रूप से दीन हीन हो रहे थे। इसी माहौल में श्रीमान जगदीश जी ने श्रद्धा से भरकर "अद्वितीय जीवन व्रतधारी, अद्वितीय महिमा है तुम्हारी" वाले भजन का गान किया जिससे बहुत अच्छा वातावरण बन रहा था। इसके बाद श्री सभापति जी ने अपना ब्यान आरम्भ किया। उन्होंने भरे हृदय से कहा कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव नेचर के विकास क्रम की अति अद्भुत और महान घटना है। पूजनीय भगवान देवात्मा को जानना और उनके साथ अपने संबन्ध स्थापन को पहचानना और उनके साथ अपना आत्मिक संबन्ध करने के योग्य होना किसी भी मनुष्य का सबसे बड़ा अधिकर और सौभाग्य है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा से और उनके संबन्ध से अज्ञात रहना सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

सभापति जी ने बताया कि नेचर में नियमों का राज है। नेचर स्वयंभू है, इन नियमों को जानना मनुष्य के लिए अति आवश्यक है तथा सबसे बड़ा सौभाग्य भी है। नेचर का नियम विकास का नियम है। उसको समझे बिना देवात्मा को समझना असंभव है। चारों जगतों में आए विकास का संक्षेप में वर्णन किया। मनुष्य के मानसिक विकास के लिये संस्थाओं का विकास हुआ है। मनुष्य ने धन और सत्ता प्राप्त करने के साधनों का विकास किया है। मनुष्य के नीच भावों ने सब संबन्धों में दुख और नर्क पैदा किया है। मानव समाज में बुराई, पाप, अत्याचार, उत्पीड़न और आतंक जारी है। सुख लालसाएँ मनुष्य को अंधा बनाती है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा सच्चाई और भलाई के पूर्ण अनुरागी हैं। वह मिथ्या और बुराई के पूर्ण शत्रु हैं। जो जन पूजनीय भगवान के साथ जुड़ता जायेगा, उसके भीतर से पाप और झूठ खत्म होता जायेगा।

इसके बाद सभापति जी ने नेचर का रूप बताया और विकास के नियम को समझाने की कोशिश की और नेबुला से सूर्य और फिर पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों के बनने के बारे में बताया। फिर पृथ्वी पर पानी के बनने और समय के साथ उसमें एक cell (सैल) के जीवों के बनने और फिर पशु जगत के विकास का संक्षिप्त वर्णन किया। फिर पशु जगत में दुग्ध-प्रदाता (Mammals) नस्लों के विकसित होने और फिर वानर, गुरिल्ला, शिंपांजी आदि की विशेष नस्ल से मनुष्य का विकास हुआ बताया। मनुष्य के शरीर का, बुद्धि का विकास बताया। बद्धि के विकास से वैज्ञानिक और साईसदान पैदा हुए। उन्होंने ने नेचर के सत्य ज्ञान के संबन्ध में बहुत ज्ञान प्राप्त किया और कर रहे हैं, नए-नए आविष्कार करके मानव को चकित कर रहे हैं।

मनुष्य के हृदय के विकास से कहीं कहीं दयावान और दयाशील मनुष्यों का विकास हुआ है। वह जन विशुद्ध परोपकारी बन कर मानवजगत की एक वा दूसरी हानि व पीड़ा का निवारण करते रहे हैं और करते हैं। सात्विक भावधारियों तक मनुष्य का विकास हुआ है। इससे आगे मनुष्य का विकास रुका हुआ था। विकास के नियम ने और आगे बढ़ कर और सबसे बड़ी छलांग लगा कर मनुष्य जगत में से देवात्मा का अद्‌भुत् विकास कर दिया।

हृदय के विकास के सिलसिले में देवात्मा का मनुष्य से एक श्रेणी का अंतर हो गया। जिस प्रकार पशु जगत से उन्नतशील मानसिक शक्तियों वाला मनुष्य सर्वथा अलग श्रेणी है, उसी प्रकार सुख अनुरागी मनुष्यों से पूर्णांग शुभ और सत्य अनुरागी देवात्मा का आविर्भाव मनुष्य से सर्वथा अलग श्रेणी का विकास है। जिन सुख अनुरागों और नीच घृणाओं का सकल मनुष्यमात्र पर आधिपत्य है, और जिसने मनुष्यात्माओं को अंधा, रोगी, दुर्बल और नारकीय बनाया हुआ है, उन भयानक सुख अनुरागों से देवात्मा का परम पवित्र आत्मा पूर्णत: निर्मल है और वह सत्य-शुभ के पूर्ण अनुरागों और मिथ्या, पाप के प्रति पूर्ण वैरागों के बीजों से लैस होकर प्रकट हुए हैं। सभापति ने देवात्मा के देवरूप की भावविभोर होकर गाथा गाई और देवशक्तियों के विकास की संक्षिप्त कथा बयान की।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा 16 साल तक श्री अकबरपुर में रहे, फिर विद्याप्राप्ति के लिये रूड़की पहुँचे, फिर वहीं मुलाजमत की। फिर 23 साल की आयु में लाहौर पहुँचे। वहाँ विद्याविभाग में सेवारत हुए। इसके बाद सभापति जी ने परम पूजनीय भगवान के अंदर किस तरह जीवन व्रत ग्रहण करने संबन्धी कश्मकश और भावना और पक्के निश्चय का क्रमागत ब्यान किया। जीवन व्रत ग्रहण करने के समय का और विरोधियों के शोरोगुल का और भगवान के खड़े होकर भगवे वस्त्रों के नाम पर अपील के जादुई असर का सिलसिलेवार वर्णन किया। 15 दिसम्बर 1882 को भगवान ने इस्तीफा दिया। तभी से विरोधता का तूफान आरम्भ हुआ और बढ़ते बढ़ते उसने जैसी अति भयंकर अवस्था धारण की, उसका वर्णन किया। Miss Mary Carpenter, महात्मा बुद्ध के जीवन और Major टक्कर और उनकी मेम ने भगवान के हृदय को जीवन व्रत ग्रहण करने के लिये जो योगदान डाला, उसका वर्णन हुआ। 20 दिसम्बर 1882 को भगवान ने अपना सदा स्मरणीय अद्वितीय महाव्रत ग्रहण किया और "सत्य शिव सुंदर ही मेरा परम लक्ष्य होवे, जग के उपकार ही में जीवन यह जावे" वाले गीत का गान किया। जीवन व्रत ग्रहण करके पूजनीय भगवान किस प्रकार धन्य-धन्य और कृतार्थ बोध करते थे-उसका बयान किया।

भगवान का हृदय गुप्त नेचर का आशीर्वाद पाकर धन्य-धन्य होकर उछलने लगा, निर्मल और उच्च आनंद की अपूर्व लहरें लेने लगा और भगवान ने अपने जन्म लेने का महान उदेश्य एक सीमा तक सफल हुआ महसूस किया।

भारतवर्ष की प्राचीन वेदान्त की महा भ्रांतिपूर्ण फिलासफी के कारण भगवान देवात्मा का घोर विरोध शुरू हो गया। भगवान देवात्मा ने आखिरकार अलग होकर 16 फरवरी 1887 को देवधर्म की घोषणा और देवसमाज की स्थापना की। सैंकड़ों और हज़ारों की तादाद में भगवान के विरोधी पैदा हो गये। विरोध के संबंध में भगवान देवात्मा की वाणी को पढ़कर सुनाया गया जो बहुत ही हृदय स्पर्शीय था। भगवान को जिन जिन घृणित

ओर दुखदाई शब्दों में पेश किया गया, उनका वर्णन किया गया। लोगों का वार्षिक उत्सव संबन्धी सभाओं में आकर सीनाज़ोरी करना, बैंचों और लैम्पों का तोड़ना, किसी वस्तु को आग लगा देना, आश्रम में ईट-रोड़ों की वर्षा करना, चिल्लाना, अश्लील गालियाँ देना, फक्कड़ बकना, छेड़ना, ढेले फेंकना, घूँसे मारना, लाठी से सिर फोड़ देना, पुस्तकें छीन कर फाड़ना, मारने की धमकियाँ देना, छपे हुए विज्ञापनों द्वारा मारने की तहरीकें करना आदि का वर्णन किया गया। "विलाप" के लेख में से पढ़ कर सुनाया गया। देव प्रकृति के अज़ाब और आघातों के बारे में बताया गया। लेखों, अखबारों और पुस्तकों द्वारा विराध करने के बारे में बताया गया। किस प्रकार भगवान एक बार नहीं, कई बार मृत्यु शैय्या पर पड़ने और निराशा में से गुज़रने के लिए विवश होते रहे।

आर्य समाज के समाचार पत्रों के 2 संपादकों के झूठे अभियोग छापने के खिलाफ मुकदमा किया गया और संपादकों को घुटने टेकने पड़े, भगवान से माफ़ी मांगनी पड़ी और अपनी गलती को 4-5 अखबारों में छापना पड़ा। चंदा सिंह के मुकदमों और आखिरकार भगवान की जय के बारे में बताया गया। इसी तरह और विरोध के अर्थात अब्दुल गफूर, देव रत्न आदि के संबन्ध में भगवान को सताये जाने के हृदय-विदारक हालात का दिलों को छूने वाले शब्दों द्वारा वर्णन किया गया। क्या सभापति, क्या कितने ही और जनों के हृदय पिघलते रहे और पाक आँसू बहाते रहे। इसके बाद सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने दिल के गहरे भावों से व्याकुल होकर धन और जन की अपील की जिसके फलस्वरूप बहुत से जनों ने दान की रकमें भेंट करनी शुरू कीं (जिसका वर्णन संभवत:) अलग करने की कोशिश की जायेगी। कई जनों ने कुछ कुछ समय के लिये या हमेशा के लिये नशे और मांसाहार छोड़ने की प्रतिज्ञायें की। महोत्सवों और कल्याण सतसंग में पहुँचने के वायदे किये। सभापति जी ने आगामी प्रोग्राम की सूचना दी और इसके साथ प्राय: 3.30 घंटे के बाद यह विशेष सभा 4 बार जय ध्वनि के साथ सम्पन्न हुई। हाज़रीन ने अपनी योग्यतानुसार उस सभा से पवित्र असर, उच्छवास और धन्य धन्य होने का अवसर पाया।

<u>दूसरी सभा - 1.30 बजे दोपहर: -</u>

यह बच्चों की सभा थी जिसमें 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों ने छोटी छोटी जीवन कथायें, घटनाएं, भजन या अन्य वाकये सुनाए। इस सभा की अध्यक्षता श्रीमती प्रिंसिपल सुरजीत बराड़ ने की। नन्हें नन्हें बच्चों को प्यार से handle किया, बोलने की दिलचस्पी और मनोरंजन का कारण भी बनी रहीं। सभी भाग लेने वालों को उचित और सुंदर उपहार वितरण किये गए।

<u>तीसरी सभा - संगीत सभा 2.30 बजे दोपहर: -</u>

अध्यक्ष: डॉ० विनोद जी खेड़ा

डॉ० खेड़ा के Institurte के बहुत से बच्चों ने बहुत संग्राम और तैयारी करके बहुत सुंदर 4 भजन प्रस्तुत किये जो बहुत ही उत्तम और सराहनीय थे। सारे संगीत का स्तर भी बहुत अच्छा था। भजन इस प्रकार थे:

1) भगवान आप हो मेरा सहारा, मैंने थामा है दामन तुम्हारा

2) धर्मदाता जगत में प्रगट हो गये, पाके उनकी शरण तुम बचाओ जीवन

3) धन्य धन्य मेरे सतगुरू, महिमा तुमरी अपरम्पार
4) मुझे भी शिफा दो शिफा देने वाले, सचाई का रास्ता दिखा देने वाले (कव्वाली)
5) सुरक्षित हूँ मैं हे भगवान तुम्हारे हाथ में आकर (solo - एकल)

इसके पश्चात गुरूकुल B.Ed. College, डेरा बस्सी की छात्राओं ने 3-4 भजन प्रस्तुत किये। इन भजनों का स्तर भी ऊँचा और आकर्षणीय था, खासकर सरबजीत Madam ने जो solo भजन "सुरक्षित हूँ मैं भगवान तुम्हारे हाथ में आकर" गाया, वह superb (सर्वश्रेष्ठ) था।

इस प्रकार यह संगीत सभा अत्यंत प्रभावशाली रही और 400 से अधिक श्रोताओं ने इसका उच्च रसपान किया। यह सभा प्राय: सवा घंटा जारी रही।

चौथी सभा - 4.30 बजे, पब्लिक लैक्चर: -

सभापति : श्रीमान बल बहादुर सिंह जी
वक्ता : डॉ॰ विनोद जी खेड़ा

पहले भजन "सुरक्षित हूँ मैं हे भगवन तुम्हारे हाथ में आकर" का गान खेड़ा Institute की छात्रा ने बहुत सुंदर ढ़ंग से पेश किया। इसके बाद श्रीमान बल बहादुर जी ने डॉ॰ खेड़ा के संबन्ध में संक्षिप्त वर्णन किया।

फिर डॉ॰ खेड़ा जी ने **"मनुष्य जीवन का लक्ष्य"** के विषय पर फरमाया: -

सबसे पहले डॉ॰ विनोद खेड़ा ने अपने लेक्चर के विषय 'मनुष्य जीवन का लक्ष्य' को अपने श्रोताओं के सामने स्पष्ट करने के लिए उनसे कुछ सवाल पूछे और तीन शब्दों - लक्ष्य, इच्छा (wish) तथा Goal (छोटा लक्ष्य) के अन्तर को स्पष्ट किया। श्रोताओं के विभिन्न उत्तरों से जो निष्कर्ष निकला, उनके द्वारा वक्ता ने समझाया कि हम में से अधिकतर यह सोचते हैं कि हमारा कोई लक्ष्य है। परन्तु सच्चाई यह है कि हम में से अधिकतर के ये Goal या aim (लक्ष्य) नहीं हैं बल्कि हमारी wishes या इच्छाएं हैं।

असल में मनूष्य का लक्ष्य वह है जिसके लिए वह पूरी तरह समर्पित हो। यदि ध्यान से सोचें तो बहुत ही कम लोगों के जीवन का कोई लक्ष्य होगा।

हम सभी शरीर तो रखते हैं पर हम शरीर के लक्ष्य को भी नहीं जानते। दिलचस्प उदाहरण के साथ उन्होंने समझाया कि एक-एक नशे के सुख की गुलामी मनुष्य को कहां से कहा पहुंचा देती है। स्वाद की गुलामी से अनगिनत सेहतें बुरी तरह बर्बाद हो रही है। आलस्य के नीच सुख के गुलाम होकर हम अपने स्वास्थ्य की कितनी हानि करते हैं। फिर उन्होंने बताया कि कामवासना के सुख ने क्या गदर मचाया हुआ है मनुष्य जगत में। जब बड़े-बड़े लोग इस रूहानी बीमारी में ग्रस्त हों तो उनके देखा देखी और अपनी इस नीच सुख की गुलामी के कारण हमारी नौजवान पीढ़ी का क्या होगा?

शरीर का लक्ष्य क्या है? शरीर का लक्ष्य सदा स्वस्थ रहना है। परन्तु हम धन, मान बड़ाई प्रशंसा, स्वेच्छाचारिता आदि के नीच सुखों की गुलामी के चक्करों में पड़कर अपना स्वास्थय ही गवां देते हैं। क्योंकि मनुष्य के जीवन का लक्ष्य बना हुआ है एक या दूसरा सुख और केवल सुख प्राप्त करना। उसे भलाई बुराई से कुछ लेना देना नहीं।

हम जिन भावों से जिन-जिन चिन्ताओं और क्रियाओं को बार-बार करते रहते हैं, वे ही हमारे जीवन में प्रबल शक्तियां बन जाती हैं। हम में से अधिकतर लोग अपने नीच सुख अनुरागों को मुख्य रखते हैं।

डॉ० खेड़ा ने श्रोताओं को स्पष्ट किया कि जिस प्रकार viral fever, Cancer, Kidney failure, Aids की बीमारी या अन्य घातक बीमारियां माफ हो जाने की चीज़ नहीं है उसी प्रकार आत्मिक दुष्कर्मों की माफी किसी पूजापाठ या गंगा स्नान या ईश्वर का नाम जपना आदि से कतई नहीं हो सकती।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा प्रदान की गई देव ज्योति और देव तेज अर्थात देव प्रभावों से खाली और आत्मा के रूप और उसके रोगों से पूरी तरह अज्ञानी मनुष्यों ने पापों के माफ हो जाने के सम्बंध में जो शिक्षा फैलाई है वह पूरी तरह मिथ्या है और अत्यंत हानिकरक भी है जिस कारण हमारी दुनिया में पाप बढ़ते ही जा रहे हैं और मनुष्य अधिक से अधिक दु:खग्रस्त होते जा रहे हैं।

अपने जीवन के सही लक्ष्य को जानने से पहले हमें यह जानना होगा कि असल में हम हैं क्या, किस चीज से बने हैं? हमारा अस्तित्व दो चीज़ों से बना है जड़ शरीर तथा शक्तिमय आत्मा। शक्ति energy अति सूक्ष्म है जिसे हम आंखों से देख नहीं सकते। उसके प्रभाव से ही उसे जान सकते हैं। कोई व्यक्ति अच्छा या बुरा काम इसी आत्मा की अच्छी या बुरी शक्तियों के अधिकार में आकर करता है। बुरे या हानिकारक कामों को हम पाप कहते हैं। "हमारे आत्मा की नीच सुखों की गुलामी ही हमसे पाप कर्म करवाती है। इन नीच सुखों की गुलामी को हम नीच अनुराग कहते हैं। यही रूहानी या आत्मिक बीमारियां हैं। नीच सुख अनुरागों की तृप्ति में रूकावट आने से जो नफरत या दूरी हमारे हृदय में पैदा होती है, नीच घृणा कहते हैं"। Nature में कोई ऐसी क्रिया, action नहीं जिसका नतीजा न पैदा होता हो।

उन्होंने समझाया कि हमारे हर सोच विचार तथा action का अच्छा या बुरा प्रभाव हमारे शरीर तथा आत्मा दोनों पर पड़ता है। बुरे प्रभाव पड़ते-पड़ते एक दिन शरीर की मृत्यु हो जाती है। अपनी आंखों देखी घटना का विवरण देकर मौत के बाद परलोक की जिन्दगी की सच्चाई पेश की। वक्ता ने यह स्पष्ट किया कि इस लोक में मृत्यु के बाद भी हमारी आत्मा परलोक में सैकड़ों, हजारों सालों तक रहती हैं और अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार हमारी आत्मा अपने ही जैसे अच्छे या बुरे आत्माओं के बीच में रहती है।

यदि हम जीना चाहते हैं तो उसके लिए शरीर तथा आत्मा दोनों के जीने और मरने की शर्तो का ज्ञान होना आवश्यक है। जैसे 9 महीने माता के पेट में रहने के दौरान हमारे इस शरीर का निर्माण होता है। उस दौरान उसमें कोई कमी रह जाए तो उसकी सज़ा सारी आयु हमें भुगतनी पड़ती है। उसी प्रकार यदि पृथ्वी पर हमारे इस जीवन में कोई आत्मिक अंग खराब बन जाए तो आगे परलोक में उसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं।

यह आवश्यक है कि हम शारीरिक और आत्मिक मृत्यु को लाने वाली शक्तियों को जानें और उनसे मोक्ष प्राप्त करें और जीवन देने वाली शक्तियों का विकास करें।

भौतिक सूर्य की महिमा दर्शाते हुए उन्होंने बताया कि भौतिक सूर्य ज्याति और तेज का मूल स्रोत है। बाहर की भौतिक रोशानी जैसे बिजली, कोयले, तेल आदि के जलने से पैदा होने वाली रोशनी और गर्माई भी मूलत: इसी भौतिक सूर्य की देन है।

देव सूर्य की महिमा का वर्णन इस प्रकार किया:

बिल्कुल इसी प्रकार रूहानी जगत के सूर्य आज से 160 वर्ष पहले सूर्योदय के समय अपने साथ वह सब सामग्री लेकर जन्मे थे जिससे वह हर अधिकारी हृदय को ज्योतिर्मान करके उन्हें उनका वास्तविक भीतरी रूप दिखाएं और अपने देव तेज के द्वारा उनकी सब नीचताओं को दमन करने की तथा हर उच्च भाव का विकास करने की क्षमता रखते हों जिससे मनुष्य को अपना सही लक्ष्य प्राप्त हो सके।

उन्होंने ऐसा इसी पृथ्वी पर कर दिखाई है।

देव प्रभावों के द्वारा जीवनों में जादुई परिवर्तन का महा अलौकिक काम हुआ है और आज भी हो रहा है। इसके बाद श्रीमान जगदीश जी ने अपना जीवन परिवर्तन बहुत संक्षिप्त बयान में बताया कि किस प्रकार वह छोटी सी आयु में कैसे-कैसे भयानक पापों और बुराईयों में फंस चुके थें और कैसे ऐसे ही एक महोत्सव की भाव प्रकाश की अन्तिम सभा में उन्हें देव प्रभाव मिले और कैसा आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन पाने का उन्हें अवसर मिला। यह बयान बहुत की अधिक हृदय-स्पर्शीय और भगवान की महिमा दर्शाने वाला था। मनुष्य जीवन का सही लक्ष्य नीच जीवन से मोक्ष पाना, उच्च जीवन में विकसित होना तथा यहां और परलोक में उच्च खुशियों के साथ दीर्घायु पाना भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर ही प्राप्त हो सकता है।

प्रिंसिपल अमर नाथ जी चल बसे

बहुत शोक है कि हमारे बजुर्गवार बहुत नेक और नम्र स्वभाव वाले और सेवाकारी बहुत पुराने सेवक और कीमती धर्म सम्बन्धि 18 दिसम्बर को परलोक सिधार गए। वह 93 वर्ष के थे। वह उन चन्द जनों में से थे जिन्होंने परम पूजनीय भगवान देवात्मा के अपनी आँखों से दर्शन किये थे। और उनकी वाणी में जीने का सौभाग्य पाया था।

देव समाज की विद्या विभाग में उनकी बेहद और अनन्य सेवाऐं हैं। ऐसे गुणशाली पुराने व्यक्ति का चले जाना बहुत बड़े घाटे और शोक की वस्तु है। उनका दाहस्संकार और श्राद्ध 18 और 26 दिसम्बर को भलीभांत देव समाज विधि अनुसाार सम्पन्न हुआ।

हम उनके पारिवारिक जनों के सम्बन्ध में अपने शोक और हमदर्दी का प्रकाश करते है और देह त्यागी आत्मा की रक्षा शान्ति और भले की कामना करते हैं।

(बलदेव सिंह)

महोत्सव का आखिरी दिन

23 दिसम्बर 2010

पहली सभा 8.30 बजे प्रात :

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय : नये सेवक सेवकाओं का ग्रहण

सबसे पहले "हे सत्यशिव सुंदर व्रत धारी, हे देवत्व के भण्डार गुरू" भजन का श्रीमान जगदीश जी ने सुंदर गान किया। उसके पश्चात गुरू महाराज जी का उनकी भव्य छवि के द्वारा फूलमाला से सबके खड़े हो जाने के साथ अर्चन किया। पूजनीय देव स्तोत्र का समूह गान हुआ और सभापति जी ने श्रद्धापूर्वक देव स्तोत्र की व्याख्या की।

फिर सबके बैठ जाने पर सभापति जी ने गहरे भावों से पूजनीय भगवान के दरबार में सभा की सफलता के लिये सहाय-प्रार्थना की। इसके बाद 4 सौभाग्यवान (2 स्त्रियाँ तथा 2 पुरूष) जनों को सेवकी की पहली श्रेणी की प्रतिज्ञाएं बताई। हाज़रीन को भी इन प्रतिज्ञओं के बारे में सावधान होने और प्रतिज्ञाओं को भली भांति सुनने स्मरण रखने व उन पर आरूढ़ रहने के लिये सभापति जी लगातार प्रेरणा करते रहे। जिन 4 सौभाग्यवान जनों को प्रतिज्ञाएं कराई गई उनके नाम इस प्रकार है: श्रीमान गुरमेल सिंह जी, केसूपुर (हरियाणा), श्रीमान जगतार सिंह, सुपुत्र श्रीमान बलजीत सिंह जी, कल्याण, श्रीमती रिशू रानी (धर्म पत्नी श्रीमान मनु जी अग्रवाल, पौत्रवधु श्रीमान धर्म रतन जी अग्रवाल), तथा श्रीमती रीता रानी जी, (धर्म पत्नी श्रीमान गोपाल चन्द्र जी, गंगानगर)। सबको विजय-पताका के तले खड़े करके एक एक का श्रीमान बलदेव सिंह जी, मंत्री , देव धर्म ने सुंदर परिचय कराया। फिर "करें हम विनती सारे, जीवन का द्वार खुल जावे, सेवक बनने का इन सबको महा अधिकार मिल जावे" भजन का समूह गान किया गय। फिर सभापति जी ने चारों विशेष प्रतिज्ञाओं और उनकी उप-प्रतिज्ञाओं का विशलेषण करके बार बार सबके दिलों पर नक्श करने की कोशिश की। फिर सब प्रतिज्ञाएं खोल खोल कर नए सेवकों को करवाई। बहुत अच्छा माहौल बन रहा था। प्रतिज्ञाओं के बाद सबका मिशन की ओर से और अन्य हाजरीन की ओर से फूलों के हारों के द्वारा सम्मान किया गया और मुबारक दी गई। इस अवसर पर कुछ जनों ने इस खुशी में कुछ दान भी दिया।

दूसरी सभा – भाव प्रकाश

सभापति : श्रीमान बलदेव सिंह जी

श्रीमान जगजीत सिंह, लुधियाना - सबसे पहले सबको इस 160 वें जन्म महोत्सव की मुबारकबाद देता हूं। अगले साल इससे भी बढ़कर महा-उत्सव मनाया जाये। खाना बहुत अच्छा लगा। सब सभाएं ध्यान से सुनीं। मुझे बहुत लाभ हुआ है। अपनी कमियाँ नज़र आई हैं और उनसे बचने की जरूरत महसूस हो रही है। खेड़ा साहब ने बताया कि काम और चीज़ है, सेवा और चीज़ है। उससे हमें भी कुछ सेवाकारी बनने की ज़रूरत महसूस हुई है। सेवा का नाम समर्पण है।

श्रीमान जी (मंत्री जी) बहुत खयाल रखते हैं। लगता है कि अपने ऊपर किसी का हाथ है- इससे बहुत खुशी मिलती है। साधन में विशेष-विशेष धर्म संबंधियों और कर्मचारी साहिबान और चारों जगतों को याद करता हूँ। उनके शुभ और कल्याण की कामना करता हूँ। किताबें पढ़ने की तरफ अब ध्यान गया है। जरूरत है और महसूस करता हूं कि उनका पाठ करके ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाऊँगा। सत्य को जानो, सत्य को मानो और सत्य पर अमल करो-

इससे बहुत प्रभावित हुआ हूं। श्रीमान जी को फोन करता रहता हूं। संबंधों की दरार खत्म हुई है। पहले से बहुत संबंध सुधरे हैं और मीठे हुए हैं। धन किस तरह खर्च करना है इसकी होश मिली है। 3 दिसम्बर को माता जी का देहांत हो गया था। उनके उपकार हिलाते हैं उनकी शुभ इच्छाओं का ख्याल आता है। ऐसी कोई गलती मुझ से न हो कि मेरे माँ-बाप और दादा-दादी के नाम को बट्टा लगे। सभाए मजबूर करती रही हैं कि अपनी तरफ ध्यान गया है और बहुत भला हुआ है।

सीता सिंह जी मल्लेका- श्रीमान बलबहादुर जी से प्रेरणा पाकर गांव की सब सभाओं में शामिल हुआ हूँ और उनकी प्रेरणा से महोत्सव पर आया। मुझे अपना आप भला मानस लगता है अगर मैं साल में एकाध बार शराब पी जाता हूं। अब एक साल के लिये शराब, माँस, अण्डा सब छोड़ने की प्रतिज्ञा करता हूं।

सुभाष जी अग्रवाल- श्रीमान जी की प्रेरणा से सभा तथा उत्सव में आते हैं और भला होता है, घर का माहौल, पूरे परिवार का बहुत अच्छा है। भगवान की कृपा हुई मेरी पुत्रवधु के सेवका बनने की बहुत खुशी हुई है। (रो रोकर) मेरी धर्मपत्नी ने मेरी बेहद सेवा की है और अब भी करती हैं। उन्हें बार बार धन्यवाद देता हूं।

एक नये जन-मैं पहले भी आया था, दो माह के लिये शराब माँस छोड़ा था। आगे प्रतिज्ञा करता हूं कि एक साल तक शराब माँस सेवन नहीं करूँगा।

राजेन्द्र जी (देहरादून)-इस बार बच्चों को लेकर सपरिवार आया हूं। बच्चों ने मिलकर रोशनी की है (वह खुद ही सैंकड़ों लड़ियाँ लेकर आये) आगे मैं भी नहीं पकड़ूंगा, बड़ा दिल करूँगा और आगे भी अधिक रोशनी करके अपना और भी भला करूँगा।

कशमीर चंद ढाणी मौजूवाली (हरियाणा)- एक गाँव में महापुरूष मिले, उन्होंने कहा "तुम्हारा बहुत भला होने वाला है। डॉ० हरदयाल सिंह जी और मैं प्रेम बनी जी से प्रेरणा लेकर यहाँ पहुँच गये। बहुत भला हुआ है- सभाओं से बहुत प्रभाव पड़ा है। मैं सदा के लियं शराब, माँस, सिगरेट, अण्डे सब से बचा रहने की प्रतिज्ञा करता हूँ। अगले साल पूरे परिवार को लेकर आऊँगा ताकि उनको भी लाभ पहुंच सके। उन्होंने गुरू महिमाके संबन्ध में एक गीत गया।

रमन (पशुओं के डाक्टर)-मैं 4 साल बाद आया हूं- बहुत अच्छा लगा है। जहां तक नशे की बात हैं- मेरे दादा जी तम्बाकू पीने के कारण 60 वर्ष की आयु में ही खत्म हो गये। अब हम सिगरेट वाले के पास भी नहीं बैठते। अब मैं गुरू महाराज जी का बहुत धन्यवादी हूं कि मुझे सीधे रास्ते पर आने का मौका मिल गया। सब बुराइयों से सदा बचा रहूंगा और अपना भला करूंगा। मैं आगे जरूर आया करूंगा। उन्होंने गुरू महिमा में अपना बनाया भजन भी गाया। (एक नये जन की तरफ से लाभ उठाते और बयान फरमाते बड़ा अच्छा लग रहा था और गुरू महाराज के चरणों में हृदय झुक रहे थे)।

बीबी भजन कौर जी (बुगी)- मेरे भाई ने (श्रीमान सुखदेव सिंह जी, इंगलैंड) मुझे प्रेरणा करके यहां भेजा है। मुझे सदा बहुत अच्छा लगता है। बहुत ही ऊँचा दर है। यहाँ सबका भला होता है।

श्री गुरूदेव राज मैं नालायक हूं-अपने बच्चों को लेकर न आ सका इसका दुख है। मुझे माता पिता का रूप नज़र न आता था। उनको तड़पाना, सताना ही मेरा काम था, अब स्वर्ग आया है। आज प्रतिज्ञा करता हूं कि पिता जी की सेवा किया करूँगा। प्रणाम भी करता हूं। अपने बच्चों को कल्याण संतसंग पर लेकर आऊँगा।

श्रीमान सीताराम जी, संगरूर :- मैं बहुत साल से सेवक हूं, मैंने कोई तरक्की नहीं की है।

अब अपनी बेटियों के बच्चों को समाज से जोड़ने की जरूरत महसूस होती है। ट्रस्टों की पूरे दिल से सेवा करता हूं। उसमें मुश्किलें भी आती हैं। सभाओं का मेरे पर बहुत असर हुआ है। मैं अपनी पत्नि से ऊँचा बोलता हूं और रूखा व्यवहार करता हूं। जो बिल्कुल नहीं होना चाहिए। इसमें जरूरी सुधार करना है। (रोते हुए) जो सेवा लाला शादी लाल जी ने मुझे दी है उसे तय दिल से निबाह रहा हूं। इसी दर पर सब की रक्षा है।

श्री बूटा सिंह जी :- सारी सभाओं से लाभ हुआ है। अपनी कमियाँ नज़र आई हैं। (रो रो कर) मैं बहुत घटिया बजूद हूं। नाशुक्रा हूं। मैं अपने पिता जी से घड़ी छुपा लेता था कि कहीं वो न ले लें। अब पछताता हूं और रोता हूं। वो जीवन दान देने वाले थे। मेरे बेटे मुझे बढ़िया घड़ी बांधने को देते हैं। मैं न शुक्रा अपने बाप से छुपाता हूं। उपकारी याद आते हैं। मैं उनकी कोई सेवा नहीं कर सकता। मुझे पानी गर्म करने की ड्यूटी दी गई। जिससे मुझे बहुत खुशी हुई। श्रीमान जी का सत्कार जितना होना चाहिए मैं नहीं करता। ये हमारी बहुत बड़ी कमी है। मेरी पत्नी को बचाने के लिए श्रीमान बल बहादुर सिंह जी ने भूखे प्यासे रहकर हस्पताल पहुंचाया और बड़े खर्च का भी अपने आप प्रबंध किया। मैं ऐसे ऐसे उपकार भी भूल जाता हूं।

प्रेम कुमार जी बनी :- एक सभा में बताया गया था कि मैं अपने माता पिता अपने रिश्तेदारों को अपनी पत्नी को दुखी करता था और सताने लगा था। मुझे अपने मामा जी की चक्की से दस किलो आटा तक भी नहीं मिला था। ऐसी मेरी हालत थी। मेरे तीनों मामों से मुझे रूपए मिले। जब मैं देने लगा तो उन्होंने लेने से इंकार किए रखा। ढ़ाई साल तक जोर देकर रूपए मुझे दिए रखे और बाद में लिए। मुझे एक स्कूल में पंखा लगवाना है मास्टर जी का धन्यवाद।

हरदेव सिंह जी :- अंदर बहुत कमियां हैं मैं अपने पिता जी के साथ बहुत अच्छा सलूक नहीं करता हूं। वो अभी दिल से मेरे साथ खुश नहीं हैं। वो सामाज की संगत की तरफ नहीं आते इसमें मेरा कुसूर है। हमारे संबंध अब भी खराब हैं (उनके छोटे भाई ने उनके कहने पर शराब मांस छोड़ने की प्रतिज्ञा कर दी।)

गुरजीत कौर जी :- सुखदेव जी ने मेरे माता पिता की तरह अपने ताया-ताई की बहुत सेवा की है। धन दे-देकर सेवा की है। और वे दोनों मरने से बचा लिए हैं मेरे चाचे भी मुझे बहुत अपना समझते हैं। और प्यार करते हैं। मैं प्रेम जी से बड़ा ऊँचा बोल गई थी। वो बहुत दूर होने लगे। उन्होंने रो रोकर माफ़ी

20 का बाकी पृष्ट 2 पर

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts